

जय आद्या शक्ति: मां अंबा को गुजरातो आरतो

टेक

जय आद्या शक्ति मा, जय आद्या शक्ति।
जयो जयो मा जगदंबे॥

पद 1

अखंड ब्रह्मांड निपाव्या, पडवे पंडे मा॥

पद 2

द्वितीया बे स्वरूप, शिवशक्ति जाणुं।
ब्रह्मा गणपति गाये, हर गाये हर मा॥

पद 3

तृतीया त्रण स्वरूप, त्रिभुवनमां बेठां।
त्रय थकी तरवेणी, तुं तरवेणी मा॥

पद 4

चोथे चतुरा महालक्ष्मी, मा सचराचर व्याप्यां।
चार भुजा चौदिशा, प्रगट्यां दक्षिणमां॥

पद 5

पंचमी पंच ऋषि, पंचमी गुण पद्मा।
पंच सहस्र त्यां सोहिये, पंचे तत्त्वोमां॥

पद 6

षष्ठी तुं नारायणी, महिषासुर मार्यो।
नरनारीना रूपे, व्याप्यां सघळे मा॥

पद 7

सप्तमी सप्त पाताळ, संध्या सावित्री।
गौ गंगा गायत्री, गौरी गीता मा॥

पद 8

अष्टमी अष्ट भुजा, आई आनंदा।
सुरनर मुनिवर जन्म्या, देव दैत्यो मा॥

पद 9

नवमी नवकुळ नाग, सेवे नवदुर्गा।
नवरात्रिनां पूजन, शिवरात्रिनां अर्चन, कीधां हर ब्रह्मा॥

पद 10

दशमी दश अवतार, जय विजयादशमी।
रामे राम रमाड्या, रावण रोळयो मा॥

पद 11

एकादशी अगियारस, कात्यायनी कामा।
कामदुर्गा कालिका, श्यामा ने रामा॥

पद 12

बारसे बालारूप, बहुचरी अंबा मा।
बटुक भैरव सोहिये, काल भैरव सोहिये, तारा छे तुज मा॥

पद 13

तेरसे तुळजारूप, तुं तारुणी माता।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुण तारा गाता॥

पद 14

चौदशे चौदा रूप, चंडी चामुंडा।
भाव भक्ति कंई आपो, चतुराई कंई आपो,
सिंहवाहिनी माता॥

पद 15

पूनमे कुंभ भर्यो, सांभलजो करुणा।
वसिष्ठ देवे वखाण्या, मार्कंड देवे वखाण्या, गाई शुभ
कविता॥

पद 16

संवत सोळ सत्तावन, सोळसे बावीस मा।
संवत सोळे प्रगट्यां, रेवाने तीरे॥

पद 17

त्रंबावटी नगरी, मा रूपावटी नगरी, मा मंछावटी
नगरी।
सोळ सहस्र त्यां सोहिये, क्षमा करो गौरी, मा दया
करो गौरी॥

पद 18

शिवशक्तिनी आरती जे कोई गाशे, मा जे भावे गाशे।
भणे शिवानंद स्वामी, सुख संपति थाशे,
हर कैलासे जाशे, मा अंबा दुःख हरशे॥

अर्थ, स्रोत और दूसरी आरती-चालीसा: sanatanbodh.in/stotra/jay-adya-shakti/